>

Title: Drying up of sacred river Ganges.

श्री रेवती रमन सिंह (इलाहाबाद): माननीय अध्यक्ष जी, मैं आपको धन्यवाद देते हुए एक बहुत ही महत्वपूर्ण सवाल को सदन के सामने रखना चाहता हूं, हमारी संस्कृति से जुड़ा हुआ यह सवाल है। गंगा हम लोगों की केवल एक नदी ही नहीं है, गंगा हम लोगों को एक पावन स्वरूप में दिखाई पड़ती है। आज से नहीं, प्राचीन काल से गंगा का अपना अलग महत्व है, लेकिन अभी यूपीए की सरकार ने, माननीय मनमोहन सिंह जी ने उसे गंगा विकास प्राधिकरण बनाने का काम किया है और राष्ट्रीय नदी घोषित किया है। मुझे अफसोस है कि केवल घोषणा करने से गंगा में कदाचित कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। मैं पूरे गंगा के बेसिन में घूम चुका हूं और मैंने देखा है कि जहां से उसका स्रोत है गंगोत्री, वह ग्लेशियर हर साल 20 मीटर पीछे सरक रहा है। [S1]

महोदया, अगर ऐसा ही रहा, तो ग्लेशियर खत्म हो जाएंगे और यदि ग्लेशियर खत्म हो जाएगा, तो गंगा का अस्तित्व भी खत्म हो जाएगा। ग्लेशियर के अलावा हम लोग और भी बहुत से काम रहे हैं, जो गंगा को मिटाने के लिए काफी हैं। यह बहुत गम्भीर विषय है। दोनों पक्ष के सदस्यगण इससे सहमत होंगे, फिर चाहे वे इधर के हों या उधर के हों कि अगर तत्काल कोई कार्रवाई नहीं की गई, तो आने वाले पांच सालों के अन्दर गंगा समाप्त हो जाएगी।

मान्यवर, आप बिहार से आती हैं। आज से पांच साल पहले बिहार में हमने देखा कि गंगा घाट में कितना पाट था, हमने बनारस में देखा कि कितना पाट था और इलाहाबाद में आज हम देख रहे हैं कि गंगा एक नाले के रूप में प्रवाहित हो रही है। अभी तक तीन बांध बन चुके हैं। एक टीहरी-गढ़वाल में, दूसरा हरिद्वार और तीसरा नरौरा में। उत्तराखंड में भा.ज.पा. की सरकार अब एक और बांध बनाने जा रही है। इसलिए मैं भा.ज.पा. के नेताओं से कहना चाहूंगा कि भैरोंघाटी में उत्तराखंड सरकार जो डैम बना रही है, जिस दिन वह डैम तैयार हो जाएगा, उस दिन गंगा में एक बूंद भी पानी नहीं आएगा। अतः मैं भारत सरकार से आग्रह करना चाहता हूं कि आप उतनी बिजली उत्तराखंड सरकार को दे दें, जितनी कि भैरोंघाटी बांध से पैदा होने वाली है और उस बांध के निर्माण को तत्काल रुकवाने का काम करें। आई.आई.टी. के बहुत बड़े प्रो. बी.डी. अग्रवाल ने, गंगा को बचाने के लिए दो बार भूख हड़ताल भी की थी। प्रधान मंत्री जी ने आश्वासन भी दिया है।

महोदया, अलकनन्दा, जो गंगा की एक ट्रिब्यूटरी है, भागीरथी और अलकनन्दा, मिलकर गंगा नदी के रूप में प्रवाहित होती हैं। यह चौंकाने वाली खबर है कि 6 किलोमीटर से 24 किलोमीटर तक, उसकी धारा सूख गई है। यह खबर टाइम्स ऑफ इंडिया में एक सप्ताह पहले ही आई थी। मैं आपके माध्यम से आग्रह करना चाहता हूं कि सरकार को निर्देश देने का काम करें कि वह इस पर तत्काल कार्रवाई करे और यह सुनिश्चित करे कि गंगा में अविरल धारा बहती रहे और गंगा में मल-मूत्र न बहाया जाए, उसे इनसे दूर रखा जाए। इसके लिए मैं आपका बहुत-बहुत आभारी रहूंगा।

श्री शैलेन्द्र कुमार (कौशाम्बी) : अध्यक्ष महोदया, मैं अपने आप को श्री रेवती रमन सिंह जी द्वारा उठाए गए विषय से सम्बद्ध करता हूं।

अध्यक्ष महोदया : ठीक है।